वानिकी एवं कृषि में एकीकृत कीट प्रबंधन अपनाकर सतत उत्पादन पर कार्यशाला की रिपोर्ट

Report on Camp Workshop "Sustainable Production by Adopting Integrated Pest Management in Forestry and Agriculture"

#AKAM# भा॰वा॰अ॰शि॰प॰-हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला द्वारा आज़ादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत 10 जुलाई, 2023 को संस्थान में "वानिकी एवं कृषि में एकीकृत कीट प्रबंधन अपनाकर सतत उत्पादन पर कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें पुजारली पंचायत के प्रगतिशील किसानों, महिला मण्डल एवं हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला के छात्रों 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

संस्थान के निदेशक, डॉ.संदीप शर्मा ने अपनी प्रारंभिक टिप्पणी में परागण प्रक्रिया, लाभकारी और हानिकारक कीटों के बारे में बात की । उन्होंने आगे कहा कि अधिक उत्पादन के लिए किसान द्वारा खेतों में हानिकारक कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरता को नुकसान होता हैं । उन्होंने आगे कहा कि पर्यावरण अनुकूल तकनीकों के उपयोग से हम मिट्टी की उर्वरता में सुधार के अलावा सतत आधार पर सभी के लिए स्वस्थ भोजन उपलब्ध करवाने में सक्षम होंगे । ऐसी तकनीकों के प्रयोग से हमारा पर्यावरण स्वस्थ, रहने योग्य एवं स्वच्छ तथा जैव विविधता से समृद्ध होगा। आजादी का अमृत महोत्सव पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि राष्ट्र ने आजादी का अमृत महोत्सव के 75 वर्ष पूरे कर लिए हैं, लेकिन अब देश अगले 25 वर्षों तक आजादी का अमृत काल मनाएगा।

मुख्य अतिथि श्री नागेश गुलेरिया, भा॰ व॰ से॰ एपीसीसीएफ एवं मुख्य परियोजना निदेशक जायका परियोजना कहा कि कीटविज्ञान संबंधी मुद्दों पर बहुत कम बात होती है । उन्होंने बताया कि हमारे वैज्ञानिक कृषि, वानिकी, आईटी क्षेत्र और यहां तक कि नासा के क्षेत्र में भी दुनिया भर में मार्गदर्शन कर रहे हैं । दुनिया में 30 लाख से भी ज्यादा कीड़े पाए जाते हैं, इनमें से सिर्फ 3 फीसदी ही हानिकारक होते हैं । उन्होंने रासायनिक कीटनाशकों के अविवेकपूर्ण उपयोग के बारे में भी बात की और कहा कि इनके उपयोग से लाभकारी कीटों को नुकसान पहुंचता है । उन्होंने टिड्डियों के हमले और उनसे फसलों को होने वाले नुकसान पर भी बात की । उन्होंने मधु मक्खियों के उपयोग पर भी जोर दिया और कहा कि वे न केवल सर्वोत्तम परागणक हैं बल्कि सर्वोत्तम शहद उत्पादक भी हैं । वन विभाग ने आजकल मोनोकल्चर की प्रक्रिया को रोक दिया है और जैव विविधता में सुधार के लिए अब हमारे जंगलों में विभिन्न प्रजातियाँ उगाई जा रही हैं। मानव की भलाई के लिए हमारी जैव विविधता को संरक्षित करने की आवश्यकता है ।

डॉ. पवन कुमार, कार्यशाला समन्वयक ने आजादी का अमृत महोत्सव के महत्व के बारे में चर्चा की और अपनी प्रस्तुति में उन्होंने वानिकी प्रजातियों जैसे ओक, देवदार और अन्य चौड़ी पत्ती वाले वृक्ष को नुकसान पहुंचाने वाले विभिन्न कीटों एवं उनके पर्यावरण हितेषी नियंत्रण के बारे में बताया । उन्होंने बताया कि रासायनिक कीटनाशकों के लगातार उपयोग से लाभकारी कीटों की हानि हुई है । उन्होंने मधु मक्खियों एवं परागण व और शहद उत्पादकता सहित उनकी अन्य लाभकारी पर्यावरणीय सेवाओं के बारे में बताया । सतत खाद्य उत्पादन एवं खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए इन लाभकारी कीटों और जैव विविधता को संरक्षित करने की आवश्यकता है । **डॉ. कुमार ने** बताया की संस्थान ने कुछ पौधे आधारित उत्पाद भी विकसित किए हैं, जिनका उपयोग कीटों के नियंत्रण के लिए, हानिकारक रासायनिक कीटनाशकों के प्रभावी विकल्प के रूप में किया जा सकता है । डॉ. **अजय श्रीवास्तव, सेवानिवृत्त वैज्ञानिक** - प्रभारी चावल एवं गेहूं अनुसंधान केंद्र मलां, जिला कांगड़ा, ने अपनी प्रस्तुति में कृषि के कीटों एवं उनके पर्यावरण-हितैषी प्रबंधन के बारे में चर्चा की । उन्होंने कहा कि किसान अक्सर इन हानिकारक कीटों को नियंत्रित करने के लिए केवल रासायनिक कीटनाशकों के उपयोग पर निर्भर रहते हैं, लेकिन एकीकृत कीट प्रबंधन के लिए आज कई अन्य तकनीकें भी उपलब्ध हैं । लाभकारी कीटों के प्रयोग से हम हानिकारक कीटों पर भी

नियंत्रण कर सकते हैं । पर्यावरण में लाभकारी सूक्ष्म जीव भी मौजूद हैं जो हानिकारक कीटों को नियंत्रित करते हैं । आजकल किसान कीटों के नियंत्रण के लिए गोमूत्र का भी उपयोग कर रहे हैं । हानिकारक रासायनिक कीटनाशकों के सुरक्षित विकल्प के रूप में कुछ पौधे आधारित उत्पाद भी बाजारों में उपलब्ध हैं । जिनके उपयोग से किसान न केवल अपनी उत्पादकता बढ़ा सकते हैं अपितु लाभकारी कीटों के संरक्षण में अहम भूमिका निभा सकते हैं । **डॉ. अश्वनी तपवाल वैज्ञानिक-एफ** ने फसलों की जैविक खेती में कृत्रिम माइकोराइजा के उपयोग के बारे में चर्चा की । रसायनों के नुकसान के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि माइकोराइजा, पौधों के अधिक प्राकृतिक तरीके से विकास को बढ़ावा देने के लिए रसायनों की अपेक्षा सबसे अच्छा विकल्प प्रदान करता है । पर्यावरण अनुकूल तरीके से अधिक उत्पादन के लिए किसान अपने खेतों में कृत्रिम माइकोराइजा को अपना सकते हैं । जिससे न केवल उनकी फसलों की उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है अपितु रसायनों से पर्यवरण को होने वाले नुकसान से भी बचाया जा सकता है । अंत में **अखिल कुमार, मुख्य तकनीकी अधिकारी** ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को उनकी भागीदारी के लिए धन्यवाद प्रेषित किया ।

Glimpses of Programme

Ajai Srivastava
Vipin Kumar
हि.व.अ.सं.
हि.व.अ.सं.

****